# अध्याय 44

| 1. | **प्रार्थना** |
|---|---|

***समूह अगुवा.*** प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

| 2. | **बाँटना** (20मिनट) *[ शान्त समय ]*<br>**ऐस्तर 6,7,8,9,** |
|---|---|

***आगे बढ़कर*** (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (ऐस्तर 6,7,8,9 )से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

| 3. | **याद करना** (20मिनट) *[ शिष्यता ]*<br>**देना: मरकुस10:45** |
|---|---|

## क-ध्यान करना

2 कुरिन्थियों 9:6-15 **पढ़**।

निम्नलिखित याद करने वाले पद को वचन को श्वेत/श्याम पट लिखें।

| देना |
|---|
| 2 कुरिन्थियों 9:6-7 |
| परन्तु बात यह है: जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा। हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करें ; न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है। 2 कुरिन्थियों 9:6-7 |

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पर लिखें:

### 1. देने के सन्दर्भ में नये नियम के सिद्धान्त ।

नये नियम में देने से सम्बन्धित सिद्धान्त 2 कुरिन्थियों 9:6-7 व 1 कुरिन्थियों 16:2 में दिये गये हैं। आइये मिलकर हम खोजें की उनमें क्या पाया जाता है।

**( 1 ) प्रथम सिद्धान्त: मसीही देना वह देना है जो आपने प्राप्त किया है।**

2 कुरिन्थियों 9:10 में लिखा है,"अत: जो बोने वाले को बीज और भोजन के लिए रोटी देता है, वह तुम्हे बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा, और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा।" मसीही जन केवल उसी में से दे सकता है जो उसने परमेश्वर से प्राप्त किया है। जो बीज मसीही जन बोता है उसे देने वाला परमेश्वर ही है। जो कुछ मसीही जन बोाता है उसे वह परमेश्वर से ही प्राप्त करता है। 2 कुरिन्थियों 5:18 में लिखा है,"सब कुछ परमेश्वर की ओर से ही है।" और 1 कुरिन्थियों 4:7 में लिखा है कि तेरे पास क्या है जो तूने(दूसरे से )नहीं पाया है?" इसलिए मसीहीयों दान या भेंट दिया जाना परमेश्वर का अनुग्रह है, किसी मसीही की भलाई नहीं। परमेश्वर का अनुग्रह केवल मसीहियों को बोने के लिए बीज ही नहीं देता है,लेकिन उसमें मसीहियों के बीज के भण्डारों को बढ़ाने और उसकी धार्मिकता की फसल को बढ़ाने की भी योग्यता पायी जाती है।

**( 2 ) दूसरा सिद्धान्तः मसीही देना नियमित तौर पर बीज बोना ( छितराना ) है।**

2 कुरिन्थियों 9:6 में लिखा गया है, "परन्तु बात यह है: जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।" मसीहियों को द्वारा दिया जाना फेंकना नहीं है। जो कोई मसीही जन देता है वह कोई नुकसान नहीं है, वरन वह गुणन होता जाता है। मसीहियों का देना बीज बोने के समान है। बाहर से देखने पर बीज बहुत छोटा और महत्वहीन दिखाई पड़ता है परन्तु भीतर से उस बीज में बहुत सी क्षमता होती है। उसके रूप के विपरीत, उस बीज के भीतर बढ़ने और जीवन के सारे गुण पाये जाते हैं। एक बीज को बढ़ाने के लिए और फल लाने के लिए, किसान को उस बीज को भूमि पर छितराने की आवश्यकता होती है। फसल को बढ़ते देखने से पहले उसके लिए बीज को छितराना बहुत ज़रूरी है। जिस प्रकार से पेड़ पर लगने वाले फल के साथ बीज बढ़ता है उसी प्रकार से मसीहियों द्वारा दिया गया दान भी गुणन के साथ बढ़ जाता है।

**( 3 ) तीसरा सिद्धान्तः मसीही द्वारा दिये जाने में, मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटता है।**

गलातियों 6:7 में लिखा है कि "मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटता है। मसीही जन जिस प्रकार से बोयेगा उसी के अनुसार काटेगा। यह नियम कृषि क्षेत्र में लागू होता है, और यही नियम आत्मिक जगत का भी नियम है। जो छोड़ा बोता है वह थोड़ा ही काटेगा और जो ज्यादा बोता है वह ज्यादा काटेगा।

हम पुराने नियम में पहले ही इस नियम का पालन होते हुए देखते हैं। नीतिवचन 11:24-25 में लिखा है"ऐसे हैं जो छितरा देते हैं,तौभी उनकी बढ़ती ही होती है; और ऐसे भी हैं जो यथार्थ से कम देते हैं, और इस उनकी घटती ही होती है। उदार प्राणी हष्ट पुष्ट हो जाता है, और जो दूसरों की खेती सींचता है उसकी भी सीचीं जाएगी"। नीतिवचन 19:17 में लिखा है 'जो कंगाल पर अनुग्रह करता है वह यहोवा का उधार देता है, और वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा"। इसके अलावा यीशु ने देने को सेवा से जोड़ते हुए कहा कि यदि 'काई जन किसी को एक ग्लास ठण्डा पानी पिलाता है" तो वह अपने प्रतिफल से कभी भी वंचित न रहेगा(मत्ती 10:42)। उसने यह भी कहा कि यदि कोई भूखे को भोजन, और प्यासे को जल पिलाता है, किसी परदेशी को सिर छुपाने की जगह देता है, वह किसी नंगें को वस्त्र देता है, बिमारों और कैदियों की सुधि लेता है, तो वह यह सारे कार्य स्वयं यीशु मसीह के लिए करता है(मत्तो25:35-40)। इसलिए उदारता के साथ बोयें और आप उदारता के साथ फसल काटने पाएंगे।

**( 4 ) चौथा सिद्धान्त : मसीही लोगों द्वारा दिये जाने में मात्रा मायने नहीं रखती वरन जिस भावना के साथ दिया जाता है वह मनोवृत्ति मायने रखती है।**

2 कुरिन्थियों 9:7 में लिखा है, "हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वालों से प्रेम रखता है।

पुराने नियम में दान देना मन चाहा नहीं हुआ करता था, वरन व्यवस्था कि द्वारा निर्धारित था(अर्थात इस्राएल की व्यवस्था के द्वारा निर्धारित था, मलाकी 3:6-12)(शिष्यता मैनुएल, परिशिष्ट 1 में पुराने नियम में दशमांस को देखें)। सर्वप्रथम, दसमांश देने की मांग या आज्ञा पुराने नियम में दी गयी और मत्ती 5:17,कुलुस्सियों 2:14, और इफिसियों 2:15, इस व्यवस्था को पूरा किया गया ,रद्द किया गया और बाद में इसे समाप्त कर दिया गया। दूसरा, दसमांश की मांग के चलते मसीही लोगों पर दसमांश देने का दबाव था जिसके कारण लोग मन से नहीं परन्तु कुढ़कुढ़ाकरा अपना दसमांश दिया करते थे। बाइबल हमें सिखाती है कि हर एक मसीही विश्वासी को अपने हृदय में ठान लेना चाहिए कि वह कितना दसमांश देना चाहता है और जितना वह निर्धारित करे,उतना वह हर्ष व मन से दे। यह भेंट दसवांश से भी ज्यादा हो सकता है(लूका 21:1-4)।

इसके विपरीत, मसीहियों को कितना भी देने की आज़ादी है। हर एक मसीही को अपने हृदय में यह ठान लेना चाहिए कि वह कितना देने जा रहा है। उस पर किसी नियम रकम या प्रतिशत मात्रा में दान देने का कोई दबाव नहीं है। अरूचि के साथ देना, अर्थात दान देने के बाद नुकसान होने या पैसे चले गये कह कर मन में दु:खी होते रहना, देना नहीं परन्तु कुढ़कुढ़ाना है। किसी अधिकारी के दबाव में आकर देना या इस वजह से देना कि लोग क्या सोचेंगे मसीही दान देने का सही तरीका नहीं है। इसलिए अगुवे या कलीसिया के विश्वासियों के लिए यह जरूरी नहीं है कि वे मण्डली में केवल दसमांश ही दें।

**( 5 ) पांचवां सिद्धान्तः मसीहियों को क्रमानुसार व नियमित तौर पर देना चाहिए।**

1 कुरिन्थियों 16:2 में लिखा है सप्ताह के पहले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे कि मेरे आने पर चन्दा करना न पड़े। कुरिन्थियों की कलीसिया को सप्ताह के पहले दिन में एक नियम रकम को

अलग संचय करने व उसे बाद में इकट्ठा करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। यहां यह वचन किसी सभा के दौरान भेंट इकट्ठा करने की बात नहीं कर रहा है, परन्तु यह काम हर एक की एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। पौलुस ने मसीहियों पर भरोसा किया और उनके साथ कलीसिया के ज़िम्मेदार सदस्यों के रूप में व्यवहार किया। इसलिए हर एक मसीही जन निर्णय लेना चाहिए कि वह अपनी आमदनी में से कितना परमेश्वर के लिए अलग निकालना चाहता है और फिर इसकी खोज करना कि कब और किसे इस धन की आवश्यकता है उसकी जिम्मेदारी है।

## 2. देने से क्या आशीषें प्राप्त होती हैं?

(1) मसीही लोगों द्वारा दान दिय जाने से उनकी अपनी जरूरते पूरी करने के लिए पर्याप्त मात्रा में धन बचता है।

2 कुरिन्थियों 9:8 "परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है....जिस से जो तुम्हें आवश्यक हो तुम्हारे पास रहे। परमेश्वर के कामों के लिए दान देना सांसारिक लोगों की दृष्टि में एक मुर्खतापूर्ण निवेश साबित हो सकता है। लेकिन इस संसार के लोग यह नहीं जानते हैं कि परमेश्वर के पास मसीहियों की छोटी सी चीज़ों को गुणात्मक ढंग से बढ़ाने की योग्यता है। चाहें मसीही लोग कितना भी दान में दे दें,परमेश्वर के अनुग्रह से उनकी बढ़ती ही होती है नुकसान नहीं। भेंट देने के बाद मसीही जन को पता चलता है कि उसके पास उसकी अपनी जरूरतों के लिए अब भी पर्याप्त मात्रा में है।

**(2) मसीहियों को देने से हर भले काम में भरपूरी प्राप्त होती है।**

2 कुरिन्थियों 9:8 में लिखा है कि,"परमेश्वर तुम्हें सब प्रकार अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है, जिससे हर बात और हर समय....हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ हो। दान देने वाला मसीही जन पाता है कि परमेश्वर उसे सभी कामों में धनी बना देता है। 2 कुरिन्थियों 9:9 में लिखा है कि,"उसने बिखेरा, उसने कंगालों को दान दिया, उसका धर्म सदा बना रहेगा।" बाइबल हमें बताती है कि कोई व्यक्ति गरीबों को उपहार देने से धर्मी नहीं ठहर सकता। केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने से ही मनुष्य उद्धार प्राप्त कर सकता है। लेकिन जब कोई मसीही जन देना प्रारम्भ करता है, तब परमेश्वर उसके धार्मिकता में धनी बनाता है जिसका अर्थ उसके भले कामों में धनी होना है।

**(3) मसीही दान देना आपकों उदारता में धनी बनाता है।**

2 कुरिन्थियों 9:11 में लिखा है,"तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिए जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है,धनवान किये जाओ।" कई लोगों ने इस वचन का अर्थ सासांरिक धन से निकाल लिया है, लेकिन यह वचन आत्मिक व आन्तिरक धन की बात करता है। भेंटें देने वाला मसीही, भौतिक तौर पर धनी हो जाएगा यह जरूरी नहीं है, लेकिन उसके पास अपनी व्यक्तिगत जरूरतों के लिए पर्याप्त मात्रा में संसाधन उपलब्ध होगें, जैसा कि हमें वचन 8 बताता है। दान देने वाला मसीही अपने आप से अधिक देना सीखता है,वह अपना अधिक समय, अपनी ताकत, अपने गुणों और अपनी भौतिक वस्तुओं को भी देना सीखता है।वह यह सब परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव करने के कारण करता है।

**(4) मसीहोयों के दान के कारण लोग प्रार्थना करते हैं।**

2 कुरिन्थियों 9:11-14 में लिखा है कि दाने लेने वाला परमेश्वर का धन्यवाद करेगा, परमेश्वर की स्तुति करेगा और देने वालों के लिए प्रार्थना भी करेगा। 1कुरिन्थियों 12:24-26 में लिखा है, "परमेश्वर देह में अंगों को इस प्रकार से रखा है कि...देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें। इसलिए यदि एक अंग दु:ख पाता है, तो सब अंग उस के साथ दु:ख पाते हैं।" शरीर के एक अंग को चोट लगने से पूरी देह प्रभावित होती है। केवल आपकी मण्डली या कलीसिया के सदस्य मिलकर ही मसीह की देह का निर्माण नहीं करते। परन्तु संसार भर में पायी जाने वाली सारी कलीसियाओं के सभी सदस्य मिलकर मसीह की देह हैं। इसी कारण अगर संसार के एक हिस्से में किसी मसीही को कोई दु:ख या तकलीफ होती है तो दूसरे मसीह को उसका ख्याल करना चाहिए।

**(5) मसीहियों की भेंट परमेश्वर के अद्भुत वरदान की सराहना करती है।**

2 कुरिन्थियों 9:15 में लिखा है," परमेश्वर के वर्णन से बाहर वरदानों के लिए उसका धन्यवाद"। परमेश्वर ने हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए, अपने इकलौते पुत्र यीशु को बलिदान दिया है। और मसोह के साथ उसने अपना सब कुछ दे दिया। परमेश्वर का दान मसीहियों के किसी भी दान से श्रेष्ठ है। उसने मसीह में होकर अपने आप को कुर्बान कर दिया और मसीह के द्वारा सब प्रकार की स्वर्गीय आशीषों से आशीषित किया है। परमेश्वर के वरदान के द्वारा ही सभी मसीहियों को उद्धार की आशीष मिली है। इसी कारण परमेश्वर को वरदान वर्णन से बाहर है। मानवीय शब्दों में उसको बयान नहीं किया जा सकता।

लेकिन मनुष्य का हृदय इसे महिमित व परिवर्तन करने वाली हकीकत के रूप में अनुभव करता है। इसलिए मसीही भेंट कोई कर्तव्य समझकर नहीं किया जाता, यह परमेश्वर के द्वारा अवर्णित वरदानों के धन्यवाद के रूप में दिया जाने वाली भेंट है। परमेश्वर का वरदान सारे मसीहियों को दान या भेंट देने के लिए प्रेरित करता है।

## 3.मसीहियों ने किसको भेंट देनी चाहिए?

**( 1 ) आपको खिलाने वाले मसीहियों को।**

1 कुरिन्थियों 9:7-14 व गलातियों 6:6 में लिखा है कि, मसीहियों को उनकी सहायता करनी चाहिए जो सुसमाचार प्रचार करते व बाइबल की सेवा निभाते हैं, चाहें वे उनकी मण्डली के हो या न हों।

**( 2 )आपकी अगुवाई करने वाले मसीहियों को।**

1 तीमुथीयुस 5517-18 के अनुसार, मसीहियों को अपनी मण्डनी के पुरनियों की सहायता करनी चाहिए जो अपने कामों को अच्छी तरह से करते हैं। पुरनिये(अर्थात पासबान या संरक्षक) किसी भी प्रकार के अनुदान सा सपोर्ट की मांग न करें और सदस्य उनकी सहायता करने को नज़रअन्दाज न करें। लेकिन वे परमेश्वर पर भरोसा करें व उसको आज्ञा को मानें।

**( 3 ) परमेश्वर का काम करने वाले मसीहियों को।**

फिलिप्पियों 4:14-18 व 3यूहन्ना 5-8, मसीहियों को मिश्नरियों व भ्रमण या सुसमाचार का दौरा करने वाले इवैन्जलिस्ट की सहायता करनी चाहिए, चाहें वे उनकी कलीसिया के सदस्य न भी हों।

**( 4 ) जरूरत मन्द मसीहियों को।**

याकूब 2:15-17,1यूहन्ना 3:17-18 और 2 कुरिन्थियों 8:7-15, मसीहियों को अपनी मण्डली के जरूरत मन्द मसीहियों या विश्वासियों क सहायता करनी चाहिए, जैसे कि विधवाओं, अनाथों, विकलांगों, कंगालों और दुखित लोगों की। वे संसार की कलीसिया के किसी भी जरूरत मन्द विश्वासी की सहायता कर सकते हैं

**( 5 ) आम जरूरत मन्द लोगों को।**

नीतिवचन 19:17; 21:13 व मत्ती 6:1-4, मसीहियों को संसार के जरूरत मन्द गैर मसीहियों की भी सहायता करनी चाहिए।

## 4. मसीहियों को कितना दान देना चाहिए?

**( 1 ) अपनी आमदनी के अुनपात में देना चाहिए।**

2 कुरिन्थियों 8:12 में हम पढ़ते हैं कि,"क्योंकि यदि मन की तैयारी हो तो दान उसके अनुसार ग्रहण भी होता है जा उसके पास है, न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं है।" और 1 कुरिन्थियों 16:2 में हम पढ़ते हैं कि हमें अपनी आमदनी या अपनी सम्पत्ति के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ना चाहिए। मसीहियों को अपनी सम्पत्ति व आमदनी के हिसाब से देना चाहिए। उदाहरण के लिए, धनी व्यक्ति अपने दसमाशं से भी अधिक दे सकता है और कोई गरीब व्यक्ति दसमांश देने के लिए मजबूर नहीं। (मैनुएल 4,परिशिष्ट1. पुराने नियम में दसमाशं)

**( 2 )अपने निर्णय के अनुसार उदारता के साथ दो।**

2 कुरिन्थियों 9:6-7 में हम पढ़ते हैं कि मसीहियों को स्वंय इस बात का निर्णय लेना चाहिए कि उन्हें कितना देना है। भेंट या दसमाशं में दी जाने वाली रकम मसीही विश्वासी और परमेश्वर के बोच का व्यक्तिगत मसला है इसमें किसी को ज़ोर जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए। लेकिन मसीहियों को उदारता के साथ देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

---

## ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***

2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** देना: 2 कुरिन्थियों 9:6-7

3) ***पुन: अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बंटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

| | | |
|---|---|---|
| **4** | **बाइबल अध्ययन** (70मिनट) | ***[ संसार में जीवन बिताना ]***<br>**संसार के कष्ट. 1 पतरस 2:11-25** |

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तमाल करते हुए 1 पतरस 2:11-25 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

## कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

**पढ़ें।** आइये हम मिलकर 1 पतरस 2:11-25 को एक साथ पढ़ें।

आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

---

## कदम 2 खोजें निरीक्षण

***ध्यान दें।*** **इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**

**या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?**

***लेखा रखें।*** एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हों। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

***बांटे।*** (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस मं बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।

(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँट गयें विचार एक ही समान हों।

**2:23**

**खोज 1. संकट के समय में मसीह ने प्रतिकार नहीं किया और न ही वह डरा।**

मैं ऐसा संयम व आन्तरिक शक्ति पाने की चाह करता हूँ, कि मैं अपने शत्रुओं के साथ वैसा व्यवहार न करूं जैसा कि उन्होंने मेरे साथ किया था।

---

**2:21**

**खोज 2. परमेश्वर मसीहियों को कष्ट उठाने के लिए बुलाता है।**

परमेश्वर मसीहियों को मसीही के पदचिन्हों पर चलने और कष्टों के प्रति ठीक वैसी ही प्रतिक्रिया प्रगट करने के लिए बुलाता है जैसी मसीह ने प्रगट की थी। जो भी मसीही, मसीह में भक्ति का जीवन व्यतीत करना चाहता है वह सताया जाएगा(2 तीमुथीयुस 3:12)। उनके साथ अन्याय व उनका तिरस्कार होगा। मसीहियों का कष्ट उठाना जरूरी है, लेकिन जो लोग मसीह का अनुसरण करते हैं उन्हें लाभ होता है।

## कदम 3 प्रश्न व्याख्या

***ध्यान दें:*** आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?

आईये हम 1 पतरस 2:11-25 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं और फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछें।

***लेखा लें:*** सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

**बाँटे** (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

***चर्चा करें:*** (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करन के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये हैं)

2:18

## प्रश्न 1. मसीहियों को अपने वेतन का किस प्रकार सम्मान करना चाहिए?

**ध्यान दें।** इस सम्बन्ध में देखें तो, पुराने ज़माने में मसीहियों को अपने कठोर स्वामियों की अधीनता में काफी कष्ट उठाना पड़ा है। पद 18 में लिखा है कि, " हे सेवको, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो"। यहा पर शब्द 'सेवक' का अर्थ घरेलू दास से है, जो बाहर काम करने वाले गुलाम की तुलना में अपने स्वामी के अधिक नज़दीक होता है(निर्गमन 5:6)। परमेश्वर चाहते हैं कि वे अपने स्वामियों के अधीन रहें जिसका मतलब है कि उन्हें अपने स्वामियों के अधीन होता और उनकी आज्ञाओं को मानना हैं। वे अपने स्वामियों के अधीन यह सोचकर डर के मारे न रहे, कि अगर वे उनका कहना नहीं मानेगें को उन्हें सताया जाएगा,वरन मन की गहराई और आदर के साथ उनके अधीन रहें, यह जानते हुए कि परमेश्वर ऐसा चाहते हैं। वे केवल भले और दयालु स्वामियों के ही अधीन न रहें, वरन कठोर स्वामियों के भी अधीन रहं। कठोर शब्द का अर्थ है, चिड़चिता, गन्दे दिमाग वाला, बेतुका, मनमौजी, सोच से परे, अधर्मी। प्रेरित पौलुस घरेलू दासों से उनके मालिकों द्वारा कठोर और बेतुका व्यवहार करने पर भी समर्पित व अधीन रहने के लिए कहता है।

स्वामी-दास के रिश्ते को आधुनिक काल में हम मालिक-कर्मचारी के रिश्ते के तौर पर देख सकते हैं। बाइबल मांग करती है कि मसीही कर्मचारियों को बढ़े आदर के साथ अपने मालिकों के अधीन रहना चाहिए। मालिक जब भी कभी बेतुकी मांग या अपने कर्मचारियों के साथ अन्याय करते हैं तब कर्मचारियों को कष्ट होता है। कई मालिक बिना कोई अतिरिक्त मज़दूरी दिये हुए अतिरिक्त काम करवाना चाहते हैं। कुछ मालिक अपने कर्मचारियों से खतरनाक परिस्थितियों में काम करवाते हैं। कई मालिक जरूरत मन्द लोगों को काम पर रखकर उनसे कठिन सेवा लेते हैं,या उन्हें उपयुक्त मेहनताना नहीं देते या उनसे बिना मज़दूरी दिये हुए काम करवाते हैं। कई देशो में मालिक लोग बिना शिक्षा या मजदूरी दिये बच्चों से काम करवाते हैं। इस प्रकार की बहुत सी परिस्थितियों के कारण मसीहियों को काफी कष्ट होता है। मसीहियों को बस ऐसे ही अधर्मी या कठोर मालिक के अधीन नहीं होना चाहिए, लेकिन उन्हे धार्मिकता के लिए भूखा और प्यासा ज़रूर होना चाहिए(मत्ती 5:6), जिसका अर्थ हुआ, परिस्थितियों को सहज करने के लिए आदर के साथ काम करना। मसीहियों को लगातार भले काम करना, कठिन परिश्रम करना, विश्वास योग्य और ईमानदार होना चाहिए। मसीहियां को अपने मालिको से अपनी शर्तों के बारे में बात करनी चाहिए और दूसरों के सामने अपने मालिक के लिए आदर के साथ बात करनी चाहिए।

लेकिन यदि स्वामी कर्मचारियों से ऐसे कामों को करने के लिए कहते हैं जो बाइबल में मना किये गये हैं,तब कर्मचारी मालिक से प्रेम के साथ उस काम को करने के लिए मना कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, चाहे कुछ भी हो मसीही कर्मचारी न घूस ले या दे सकता, व्यापार में धोखा और झूठ नहीं बोल सकता,चोरी या किसी भी प्रकार की बुराई नहीं कर सकता। जब भी कभी उनके मालिक उनको धमकाये या डराये, ता वे कह सकते हैं कि वे इस दुनिया में किसी भी व्यक्ति की बात मानने से बेहतर परमेश्वर की बात मानना पसन्द करेंगे( प्रेरितों 4:19-20; 5:29)। जब कभी भी उनके मालिक उन्हे दण्ड दे या उन्हें नौकरी से निकाल दें, तो उन्हें इसे आदर के साथ सह लेना चाहिए। मसीही जन भले कामों के लिए कष्ट सह सकता है, परन्तु उसे बुराई करने के लिए तकलीफ नहीं उठाना चाहिए।

---

2:19

## प्रश्न 2. परमेश्वर की दृष्टि में सही कामों के लिए दु:ख उठाने के क्या लाभ हैं?

ध्यान दें। मसीहियों को गलत कामों के लिए दण्ड पाने और भले कामों को करने के लिए दु:ख उठाने के बीच में भेद को समझना चाहिए। मसीही जन बुरे कामों के लिए कष्ट उठाने के लिए नहीं लेकिन भले कामों के लिए दु:ख सहने के लिए बुलाए गये हैं। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने अधिकतर भले व ठीक काम करने के लिए दु:ख उठाया। यीशु ने भी सही कामों को करने के कारण अत्याचार सहा। मसीही लोग भले कामों को करने के लिए दु:ख सहने हेतू बुलाये गये हैं।

लेकिन मसीहियों को यीशु मसीह के समान कष्टों और तकलीफों के प्रति प्रतिक्रिया करने के लिए बुलाया गया है। उन्हें इनकार या डरना नहीं चाहिए, वरन अपने जीवन व उस परिस्थिति को परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए, जो अपने समय में सब बातों का न्याय करेगा। इसके अलावा उन बातों के लिए दु:ख उठाने से मसीहियों को बहुत फायदा होगा जो परेमश्वर की दृष्टि में ठीक हैं:

मत्ती 5:11-12 धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारो निन्दा करे, और सताए, और झूठ बोल बोल कर तुम्हारे विरूद्ध में सब प्रकार की बुरी बाते कहे। तब आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बढ़ा फल है। इसलिए कि उन्होने उन भविष्यद्वक्ताओं (युसुफ, मूसा, एलिय्याह, यिर्मयाह, दानिय्येल)को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से समाया था।

इब्रानियों 12:10-11 में लिखा है," वह तो हमारे लाभ के लिए हमारी ताड़ना करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाए। वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं पर शोक की ही बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते सहते पक्के हो गये हैं बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।

याकूब 1:2-4 में लिखा है, "हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परिक्षाओं में पड़ो तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे।" अत: भले कामों के लिए दु:ख उठाने के बहुत से फायदे हैं।

---

2:20

## प्रश्न 3. संसार के अन्दर इतना कष्ट और मृत्यु क्यों है?

**ध्यान दें।** ज्यादातर लोग परमेश्वर की दृष्टि में सही काम करने की वजह से दु:ख नहीं उठाते, वरन परमेश्वर की दृष्टि में गलत कार्यों को करने के कारण कष्ट उठाते हैं। पांच मुख्य कारण, क्यों लोग गलत कामों के कारण दु:ख उठाते हैं:

**( 1 ) लोग भक्तिहीन होने के कारण कष्ट उठाते हैं।**

परमेश्वर लोगों की अभक्ति को लेकर क्रोधित हैं(रोमियों 1:18-23)। अभक्ति का अर्थ बाइबल के परमेश्वर के साथ गलत सम्बन्ध रखना है। अभक्ति विश्वास नहीं करती कि परमेश्वर का अस्तित्व है इस कारण वह व्यक्ति नास्तिक जीवन व्यतीत करता है और वह खुद ही अपना ईश्वर होता है और जो उसे अच्छा लगता है वही काम करता है। भक्तिहीन बाइबल के परमेश्वर पर भी विश्वास नहीं करता, वह मनुष्य के द्वारा बनाये गयी किसी मूर्ति या किसी धार्मिक नेता को गुरू मानकर विश्वास करता है। दूसरे शब्दों में भक्तिहीन बिना उस सच्चे परमेश्वर के जीवन व्यतीत करता है जिसने अपने आप को बाइबल में प्रगट किया है। भक्तिहीनता उस परमेश्वर के साथ गलत सम्बन्ध है जिसने अपने आप को बाइबल में प्रगट किया है।

भक्तिहीनता के फलस्वरूप लोगों के विचार निरर्थक और उनके हृदय अन्धकारमय हो जाते हैं। लोगों के विचार निरर्थक, बेकार हो जाने की वजह से वे अपना जीवन झूठ और धोखेबाजी में बिताते हैं, जिसकी वजह से लोगों को कष्टों को सामना करना पड़ता है। लोगों को आत्मिक व नैतिक जीवन जीने के लिए मिलने वाले प्रकाश के अभाव के कारण लोग ऐसे संसार में जीवन व्यतीत करते हैं जहां लोगों को भलाई करने की शक्ति नहीं मिलती जिसके कारण लोगों को कष्ट का सामना करना पड़ता है।

**( 2 ) लोग दुष्टता के कारण कष्ट सहते हैं।**

परमेश्वर लोगों की दुष्टता को देखकर भी दु:खी होते हैं(रोमियों 1:23-32)। दुष्टता का अर्थ दूसरे लोगों के साथ गलत सम्बन्ध रखना है। लोग एक दूसरे के साथ बहुत से गलत काम करते हैं। लोग एक दूसरे को अश्लीलता और चरित्रहीन जीवन शैली में खींच लेते हैं। वे बुराई करने के नये नये तरीके ढूंढ़ते और एक दूसरे के प्रति दुष्टता करते हैं। रोमियों 1 में लिखी हुई बातों पर ध्यान दें, जैसे आत्मिक क्राध और परमेश्वर से नफरत, यौन अनैतिकता व भ्रष्टता, व्यापारिक लालच व धोखा,समाज में एक दूसरे की बुराई,घमण्ड और राजनैतिक असंवेदनशीलता और विश्वासहीनता। लोग बुराई से भरे हैं और बुराई करते हैं; वे बुराई तैयार करते और बुराई को स्वीकार करते हैं। कइ बार लोग अपनी अपवित्र लड़ाईयों और अपवित्र जीवन शैली को धर्म का जामा पहिना देते हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जब लोग एक दूसरे के लिए ऐसे काम करते हैं तो उन्हें कष्ट उठाना पड़ता है।

**( 3 ) लोग झूठी शिक्षाओं पर विश्वास करने के कारण दु:ख उठाते हैं।**

लोग सत्य को दबाते और उसे बदल देते हैं(रोमियों 1:18,25)। सत्य को दबाना या उसे बदलना अपने आप में ही गलत रिश्ता है। यह किसी के स्वयं अपने विवेक खिलाफ पाप है। परमेश्वर के बारे में सच्चाई, परमेश्वर के कथन और उसके कामों को, मनुष्य की परिस्थिति और संसार के अन्त को लेकर संसार ज्यादातर अनभिज्ञ रहता है, उसे दबाया जाता या उसकी सत्य को बदल दिया जाता है। सरकार अपने आप को स्वयं से ऊंची आत्मिक व नैतिक शक्ति के अधीन नहीं करना चाहती। शक्तिशाली

लोग ज्यादातर सत्य को दबा या बदल देते हैं, क्योंकि यदि वे सत्य को स्वीकार करते हैं तो उन्हें उसके अनुसार बदलना पड़ेगा। जब तक सरकार व सत्ताधारी लोग बदलने से इनकार करते हैं, अधर्मी व स्वार्थी हैं, आत्म-धार्मिक व आत्म केन्द्रित हैं, तो वे अपनी ओर से सदैव सत्य को बदलने का प्रयास करते ही रहेगें।

झूठी शिक्षाओं पर विश्वास करन से लोगों में असुरक्षा व महत्वहीनता का भाव उत्पन्न होता है, जिससे उन्हें कष्ट होता है। वे असुरक्षित महसूस करते हैं का अर्थ है कि वे बिना शर्त के प्रेम किया जाना महसूस नहीं करते। वे महत्वहीन महसूस करते हैं का अर्थ है कि वे महसूस करते हैं कि उनके जीवन का अब कोई मतलब या उद्देश्य नहीं है।

**( 4 ) मृत्य के कारण लोगों को कष्ट होता है।**

रोमियों 6:23 में लिखा है,"पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है"। और क्योंकि सभी लोगों ने पाप किया है,इसलिए लोग मरेंगे। पाप का परिणाम मृत्यु है। सभी लोगों को मृत्यु से डर लगता है। यह बहुत ही भयानक बात है कि लोग इसके बारे में सोचना या इसके बारे में बात करना नहीं चाहते हैं। बहुत से लोगों के लिए मृत्यु सारे कष्टों को चरमोत्कर्ष बन जाता है । मृत्यु का अर्थ अलगाव होता है। मृत्यु का अर्थ अपनी देह से अलग होना होता है। आपकी देह वापस मिट्टी में मिल जाती है। मृत्यु का अर्थ अपने प्रिय लोगों से अलगाव होता ह। आपको उन्हें इस धरती पर पीछे छोड़ना ही पड़ता है। मृत्यु का अर्थ होता है आपकी सम्पत्ति से अलगाव, आपकी सारी शिक्षा का नुकसान, आपकी नौकरी का नुकसान, अपनी उपाधि व उपलब्धियों का नुकसान उठाना। अपनी मृत्यु के समय आपने जो कुछ इस धरती पर मेहनत करके कमाया होता है उसे अपने साथ नहीं ले जा सकते। मृत्यु उन लोगों के लिए भी दु:ख दायी होती है जो पीछे छूट जाते हैं। लोग अपने प्रियजनों से अलग हो जाते हैं और उनसे वंचित रहते हैं। अत: जितने लोग जीवित हैं, वे मृत्यु से डरते हैं, क्यों वे नहीं जानते कि मृत्यु के बाद क्या अपेक्षा की जा सकती है। मृत्यु के कारण सभी लोगों को कष्ट होता है।

**( 5 ) लोगों को न्याय होने के कारण उन्हें कष्ट होता है।**

लोगों को कष्ट इसलिए होता है कि वे जो बोते हैं वहीं काटते हैं(गलातियों 6:7-8)। जो लोग परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं परमेश्वर उन्हें दण्ड देता है। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के अन्दर बहुत से नियमों को बनाया है। यदि उन नियमों को उल्लंघन किया जाता है तो परिणाम दण्ड होता है। उदाहरण के लिए, यदि एक व्यक्ति गुरूत्वाकर्षण के नियम को तोड़ता है, तब उसका उस बुरी तरह से गिरना निश्चित है। इसी प्रकार से परमेश्वर ने अपनी सृष्टि और लोगों के लिए आत्मिक व नैतिक नियमों को तैयार किया है। यदि लोग परमेश्वर के आत्मिक या नैतिक नियमों का उल्लंघन करते हैं तो उन्हें दण्ड मिलता है और परिणाम स्वरूप उन्हें कष्ट उठाना पड़ता है। बाइबल कहती है कि, "मनुष्य जो बोता है वही काटता है"(गलातियों 6:7)। जो कोई आलस्य को बोता है वह कंगाल हो जाता है। जो कोई नफरत को बोता है उसके सम्बन्ध टूट जाते हैं। जो तानाशाही को बोता है वह झगड़ों की फसल काटता है। ज़्यादातर अभक्ति और दुष्ट जीवन शैली का फल उसे इसी जीवन काल में मिल जाता है। लोग अपने ही दुष्ट व बुरे कामों को परिणाम भुगतते हैं।

लोग परमेश्वर की चेतावनी की महाविपदा के कारण कष्ट उठाते हैं। हाग्गै 1:6-10 में लिखा है कि परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देता है जो परमेश्वर को नज़रअन्दाज, अस्वीकार करते या उसकी आज्ञा पालन नहीं करते हैं। परमेश्वर सारे जगत को नियन्त्रित करता है, जिसमें इतिहास की हर एक घटना और प्रकृति की सारी शक्तियां शामिल हैं। जब लोग परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते या परमेश्वर और मनुष्य के बीच में सम्बन्ध टूट जाता है, तब परमेश्वर उन पर से अपनी छत्र छाया को हटा देता है, और कई बार तो उन्हें दण्ड भी देता है। और जब परमेश्वर लोगों को न्याय करता है तो उन्हें कष्ट होता है। उदाहरण के लिए, वह पेड़ों से फल गायब कर देता है और लोगों की भोजन वस्तु और कपड़ों जैसी बुनियादी जरूरतें पूरी नहीं हो पातीं। वह लोगों की कमाई को कम कर देता है और जीवन से उनकी ऊँची अपेक्षाएं समाप्त हो जाती हैं। इस तरह से परमेश्वर सब प्रकार की आपदाओं जैसे भूकम्प, बाढ़ और सूखा और अकाल के द्वारा इतिहास में पाप के खिलाफ अपनी अप्रसन्नता को ज़ाहिर करता रहा है ताकि लोगों को मन फिराव व परमेश्वर के पास आने के लिए चिताया जा सके(यहेजकेल 14:21; आमोस 4:6-12)।

जब परमेश्वर अन्तिम न्याय करेगा,तब लोग काफी तकलीफ का सामना करेंगे। इब्रानियों 9:27 में लिखा है कि परमेश्वर का अन्तिम न्याय मुत्योपरान्त होगा। तब परमेश्वर मनुष्य का उसकी सारी भक्ति,दुष्टता और झूठी शिक्षाओं पर विश्वास करने और परमेश्वर को अस्विकार करने के लिए न्याय करेगा। दुष्टों को परमेश्वर से हमेशा के लिए अलगाव का दण्ड मिलेगा, और वे

दिन और यातनाओं और पीढ़ाओं को भोगेंगे(2 थिस्लुनिकियों 1:8-9)। परमेश्वर के अन्तिम न्याय का दण्ड शारीरिक मृत्यु से भी ज्यादा बुरा है। सारे अविश्वासी व दुष्ट लोग भविष्य में कष्ट सहेंगे। यह बहुत ही गम्भीर मामला है। परमेश्वर द्वारा न्याय किये जाने के बाद मिलने वाला दण्ड धरती के वर्तमान कष्टों या तकलीफों से बहुत बुरा होगा!

सभी लोगों को गलत काम करने का दण्ड मिलेगा। तथापि, मसीहियों को गलत काम करने के लिए कष्ट नहीं उठाना चाहिए।

---

**2:21-23**

**प्रश्न 4. भले काम करने के बावजूद कष्ट मिलने पर भी मसीहियों को किस प्रकार प्रतिक्रिया देनी चाहिए।**

**ध्यान दें।** संसार में, जब लोगों को कष्ट उठाना पड़ता है वे आक्रोश या उपद्रव के द्वारा अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। वे कार्यकर्ता होने के नाते अपने बनाये गये मानवीय अधिकारों के आधार पर अपनी लड़ाई को लड़ते हैं। जब उनके मालिक लोग उनकी मांगों को पूरा नहीं करते, तो वे हड़ताल कर देते हैं, दूसरे कर्मचारियों को उनके विरोध प्रदर्शन में शामिल होने के लिए कहते हैं, और जो लोग उनका साथ नहीं देते वे उन्हें सताते हैं। जब उनकी मांगों को नहीं माना जाता तो, वे उपद्रव फैलाने लगते, अपने संगी कर्मचारियों को मारने लगते, अपने मालिकों की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाने लगते यहां तक कि वे सार्वजनिक सम्पत्तियों को भी नुकसान पहुचाने लगते हैं। "वे आंख के बदले आंख निकाल लेते तथा दांत के बदले दांत तोड़ देते हैं (मत्ती 5:38)।

मसीही लोगों को भले काम करने पर कष्ट मिलने पर किस प्रकार की प्रतिक्रिया देनी चाहिए। प्रेरित पतरस कहता है कि मसीहियों को अपने स्वामी, यीशु मसीह के पदचिन्हों पर चलना चाहिए। उसने कभी कोई पाप नहीं किया, लेकिन फिर भी लोगों ने उसकी बेईज्जती की, तब उसने विरोध नहीं किया। उसने लोगों की बुराई के बदले उन के साथ बुराई नहीं की। जब लोगों ने उसे थप्पड़ व डण्डों से मारा, तब उसने उन्हें कोई धमकी नहीं दी। वह अगर चाहता तो स्वर्गदूतों की सेना की सहायता से उनसे बदला ले सकता या उन्हें दण्ड दे सकता था, लेकिन उसने अपना मुँह नहीं खोला।

तथापि, भले काम करने पर भी कष्ट या दु:ख उठाते समय यीशू मसीह पूरी तरह से निष्क्रिय नहीं रहा। पद 23 में लिखा है "कि वह अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथों में सौंपता था।" जब कभी लोगों ने यीशु को सताया, यीशु ने प्रार्थना की और अपने मुद्दे को परमेश्वर पिता के हाथों में सौंप दिया। किसी पर दोष लगाने तथा उसे दण्ड देने का अधिकार केवल परमेश्वर के हाथों में है(रोमियो 12:17-21)। उसके मानवीय स्वभाव में रहते हुए, यीशु मसीह ने किसी का न्याय करने,दोष लगाने और दण्ड देने का अधिकार परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया था। परमेश्वर अपने नियुक्त समय में, परमेश्वर पिता दुष्ट लोगों, चाहे वे आपके मालिक हों, आपकी सरकार हो या आपके राष्ट्र का धर्म हो सबका न्याय करेगा। इसलिए यीशु ने उन्हें धमकाने या उनसे विरोध की जरूरत महसूस नहीं की। मसीहियों को भी यीशु मसीह के पदचिन्हों पर चलते हुए विरोध करना या धमकाना नहीं चाहिए।

उसने दु:ख उठाकर भी अपने दुश्मनों के लिए प्रार्थना की(लूका 23:34; 6:27-28)।

---

**कदम 4. उपयोग इस्तेमाल**

***ध्यान दें:*** इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

**बांटे व लेखा रखें:** आईये हम 1 पतरस 2:11-25 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

***ध्यान दें:*** किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

***लिखें:*** इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा,और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

## 1 पतरस 2:11-25 के आधार पर सम्भवत: लागू की जाने वाली बातों के उदाहरण।

**2:11** याद रखें कि पापमय इच्छाओं को त्यागना, जो हमारी आत्मा के विरूद्ध लड़ाई लड़ती है,कठिन हो सकता है। इस प्रकार की इच्छाएं, कामुक इच्छाएं, आत्म-केन्द्रित इच्छाएं, स्वार्थीपन, आत्मधार्मिकपन, भौतिक वस्तुओं के लिए लालच, उपाधि(परिवार या समाज में) या प्रसिद्धि हो सकती हैं। अपनी पापमय इच्छाओं के खिलाफ लड़ना बहुत दु:खद प्रक्रिया हो सकती है। लेकिन उसका फल पवित्रता और धार्मिकता होगी।

**2:12** याद रखें पागानी और दूसरे धर्मों के लोग आपको मसीही होने के कारण, यीशु मसीही की आराधना करने के लिए और मसीही जीवन शैली अपनाने के लिए सता सकते हैं। लेकिन यदि आप उनके बीच में नियमित तौर पर भले कार्य करते रहें(लूका 6:27-28), तो ये लोग एक न एक दिन बदलकर (नीतिवचन 16:7) परमेश्वर की महिमा करेंगे।

**2:13-15** हर एक उस बात में अधीन रहो जो परमेश्वर की दृष्टि में मसीहियों पर अत्याचार करने वाली सरकार को लेकर ठीक हो। परमेश्वर की दृष्टि में भले काम करने के द्वारा, आप उनकी बेकार की बातों को शान्त कर सकते हैं।

**2:16** अत्याचार करने वाली व मसीही विरोधी सरकार के अधीन भी स्वतन्त्र लोगों के समान जीवन बिताएं, अर्थात ऐसे लोगों के समान जिन्हें पाप की शक्ति से छुटकारा तथा परमेश्वर की ओर से क्षमा मिली हो। आज़ाद लोगों के समान जीवन व्यतीत करें, अर्थात ऐसे लोगों के समान जो नफरत, विरोध,धमकियों और झूठ और अन्याय से आज़ाद हो।

**2:17.** तानाशाही और मसीही विरोधी सरकार के अधीन रहते हुए भी एक दूसरे के प्रति आदर को प्रदर्शित करें। हर एक मसीही मण्डली के सदस्य को प्रेम करने के द्वारा आप मसीही भाईचारे व आदर को प्रगट कर सकते हैं, खास तौर पर जब उन पर जुल्म या कष्ट होता है। आप एक मात्र परमेश्वर का भय मानने के द्वारा,जिसने अपने आपको बाइबल में जाहिर किया है परमेश्वर के प्रति उपयुक्त आदर प्रगट करते हैं, खास तौर पर तब जब आपको खुद यीशु मसीह पर विश्वास करने के कारण सताया गया हो। आप अपने देश के नियमों व कानूनों का पालन करने के द्वारा अपने देश की सरकार का आदर करते हैं, केवल उन नियमों को छोड़कर जो बाइबल का सीधे तौर पर विरोध करते हैं।

**2:18-20** यदि आप किसी गैर मसीही मालिक के यहां काम करने वाले हैं, तो आप अपने पूरे मने से उन सारी बातों में उन सारी बातों में उसका आदर करें जो बाइबल का विरोध नहीं करती हैं। यदि वह आपके साथ कठोर व्यवहार करता है, तो उन परिस्थितियों में भी अपने परमेश्वर को याद रखने के लिए तथा उस अन्याय के कष्ट को सहने के लिए परमेश्वर आपकी सराहना करेगा।

**2:21-23.** कभी यह न भूलें कि परमेश्वर ने मसीहियों को दु:ख उठान के लिए बुलाया है। परमेश्वर ने अपनी दृष्टि में उचित काम करने के बदले दु:ख उठाने के लिए आपको बुलाया है। उसने आपको तकलीफों के प्रति ठीक वैसी ही प्रतिक्रिया देने के लिए बुलाया है जसी यीशु ने अपनी तकलीफों के प्रति प्रतिक्रिया दी थी। उसने आपको दूसरों के द्वारा बुराई किये जाने पर भी विरोध न करने के लिए बुलाया है। उसने आपको दूसरों द्वारा दु:ख पाने पर भी उन्हें किसी प्रकार से न धमकाने के लिए बुलाया है। उसने आपको अपनी कठिन परिस्थितियों का या जिन लोगों के द्वारा आपको दु:ख पहुंचा है उनका न्याय करने के लिए नहीं बुलाया है। उसने आपको अपना जीवन व अपनी सारी कठिन परिस्थितियों को परमेश्वर को सौंपने के लिए बुलाया है! परमेश्वर ने मसीहियों को कष्ट उठाने और अपने कष्टों को प्रतिक्रिया देने के लिए बुलाया है।

## 2. 1 पतरस 2:11-25 में व्यक्तिगत तौर पर इस्तेमाल की जाने वाली बातों का उदाहरण।

दु:खों के बीच में मैं मसीह के उदाहरण का अनुसरण करना चाहता हूँ। हर बार जब लोग मेरी बेईज्जती करते हैं, मैं उनका विरोध करने की बजाय उन्हें आशीष देना और उनके लिए भलाई करना चाहता हूँ। यदि मुझे लोगों के व्यवहार के कारण तकलीफ पहुंचती है, तो मैं उस दर्द से भागने की बजाय उसे सहूंगा।

मैं उस वजह पर ध्यान केन्द्रित नहीं करना चाहता जिसकी वजह से मुझे कष्ट हो रहा है, वरन उन परिणामों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहता हूँ जो परमेश्वर की दृष्टि में भले कामों के कारण दु:ख उठाने के बाद मेरे जीवन में प्रगट होने वाले हैं।

---

| **कदम 5. प्रार्थना** | **प्रतिउत्तर** |
|---|---|
| आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें 1 पतरस 2:11-25 में सिखाई हैं। (जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।) | |

| 5 | **प्रार्थना** (8 मिनट) | ***[ प्रतिक्रियाएं ]*** |
|---|---|---|
| | | **दूसरों के लिए प्रार्थना करें** |

दो या तीन के समूह में होकर **प्रार्थना करते रहें**। एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

| 6 | **तैयारी** (2 मिनट) | **[ निर्धारित कार्य ]** |
|---|---|---|
| | | **अगले अध्याय के लिए** |

***( समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ 1 पतरस 2:11-25 20 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: अय्यूब 1.2.12.व 14 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। देना: 2 कुरिन्थियों 9:6-7। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।